बाबाजी की अमर कथा

तीसरा अध्याय'

''जय बाबे दी''

श्री बाबा बालक नाथ जी का जन्म

दियोट सिद्ध महाराज बाबा बालक नाथ जी का जन्म श्री जगन्नाथ जी के आर्शीवाद से तथा भगवान शंकर जी के वरदान द्वारा शुक देव मुनीजी के जन्म के समय गौड ब्राहमण पिता विष्णु शर्मा तथा माता लक्ष्मी जी के गृह गुजरात काठियावाडा में हुआ जो जूना गढ अखाडे के पास है। माता–पिता के घर सन्त महात्माओं के आर्शीवाद से एक बालक का जन्म हुआ सुनहरे केश गले में सिंगी व रूद्राक्षी माला, पैरों में पदम की चमक, सुन्दर पहुये व मस्तक का तेज ऐसा अनुभव होता है कि प्रभु ने मानव रूप मे अवतार लिया है। इनका सुन्दर स्वरूप देखकर मन अति प्रसन्न होता था, क्योंकि यह अवतारी जीव थे। इनके पिता जी ने बडे–बडे विद्वानो ज्योंतिषियों को बुलाकर बाबाजी की जन्म कुण्डली लिखवाई बाबाजी के मस्तक का तेज देखकर विद्वानों ने कहा यह लडका कोई अवतारी जीव अनुभव होता है और यह बडा राज योगी होगा। इनके माता–पिता ने इनका नाम बालक देव रख दिया। तपस्या से इन्हे सिद्ध तथा नाथ की पदवी प्राप्त हुई। जब बालक देव पॉच वर्ष के थे, तो इनके माता–पिता ने इन्हे गुरूकुल मे शिक्षा के लिये भेजा। गुरूकुल में विधा प्राप्त करके उच्च विधा के लिये काशी के उच्च विद्वानो के पास चलेगये । श्री बालक देवजी थोडे ही समय में संस्कृत भाषा तथा चार वेद शास्त्र, धरम–कर्म, यज्ञ, हवन, की पूर्ण ब्रहम विधि के ज्ञाता हो गये । थोडे ही समय में विधा के पूर्ण ज्ञाता तथा विधा का अनमोल धन प्राप्त करके घर लौट आये। जब बाबाजी पूर्ण विधा की प्राप्ति करके आये, तब साधू–सन्त तथा गउं गरीब की सेवा में लीन हो गये । इनके माता–पिता इनको इकलौता बेटा मानकर कुछ नहीं कहते थे।

एक रोज माता–पिता ने बाबाजी की शादी का विचार करके कहा कि बेटा हमारी इच्छा है कि आप की शादी कर दी जाये, तब बाबाजी ने साफ–साफ इन्कार कर दिया। माता–पिता के बार–बार मजबुर करने से एक दिन सुबह अपन नित्य काम करने गये तो फिर वापस लौट के ही नहीं आये। बाबाजी पंच तत्व से रहित हो कर संसार को झूठा जानकर वृदावन चले गये वहां पर एक गउनी की सेवा में लग गये। गउओं को वन मे छोड कर , भक्ति में लीन हो गये। शाम को गउओं को आवाज लगाकर गउओं को घर भेज देते थे। बार वर्ष इसी तरह गउ सेवा में लगे रहे। बाबाजी के मन मे साधू सन्त महात्मा सिद्ध पुरूषों के सत्संग का बडा प्रेम था।

एक दिन बाबाजी गउ सेवा में लगे हुये थे तो वृदावन की यात्र को गिरनार पर्वत जूना अखाडे के महन्त श्री दत्तात्रेय जी महाराज अपने अखाडे (शिष्यों) सहित आये। बाबा बालक देव को देखकर अपने शिष्यो से कहने लगे यह बालक बडा करनी वाला महा पुरूष मालूम होता है। इसे हमारे पास ले आओ। एक शिष्य गुरूजी की आज्ञा पाकर बालक देव के पास गया, और कहने लगा कि आपको जूना अखाडे के महन्त श्री दत्तात्रेय जी महाराज ने याद किया है। जानी–जान बालक देवजी सब खेलो को जानते हुये दत्तात्रेय जी महाराज के पास चले गये, नमस्कार कर के कहने लगे, कि महाराज क्या हुक्म है। दत्तात्रेय जी ने कहां हे

बालक मैने तुम्हे, तुम्हारे मस्तक का तेज देखकर बुलाया है। तुम्हारी मस्तक रेखा बडी उंची पदवी पर पहुचने वाली है, यह सर्व सिद्ध मण्डली गिरनार पर्वत जूना अखाडे से वृंदावन की यात्र को आयी है, सो तुम्हारे बडे पूर्ण भाग है, कि जो ईश्वर ने कृपा करके तुम्हारा मेल करवाया हैं। सो तुम हमारे शिष्य बन कर अपनी मन्जिल को हासिल करो। बालक देव जी दत्तात्र्यि जी महाराज के यह वचन सुनकर अती प्रसन्न हुये और दत्तात्र्यि जी महाराज को खुशी से गुरू स्वीकार कर लिया बालक देव जी सिद्ध मण्डली में शामिल होकर जूना अखाडे पहुंच गये। जब बालक देव जी सिद्ध मण्डली जूना अखाडे में शामिल होगये। तब दत्तात्र्यि जी महाराज ने बालक देव जी को शिष्य बनाने के लिये शुभ दिन नियत किया जब वह दिन आया तो उस दिन बहुत बडा यज्ञ किया जिसमे दूर–दूर के ऋषि–मुनी, सन्त–महात्मा शामिल हुये, तभी एक रोती चिल्लाती हुई एक स्त्रि वहां पहुंची और दत्तात्र्यि जी महाराज से विनय की ''महाराज मै और मेरा इकलौता बेटा आपके यज्ञ में शामिल होने आ रहे थे तो रास्ते में एक शेर ने मेरे बच्चे को छीन लिया आप कृपा करके मेरे बेटे की जान बचायें'' तभी दत्तात्र्यि जी महाराज ने माई के बच्चे को खोजने के लिये अपने शिष्यों को भेज दिया। बाबा बालक देवजी भी इस बच्चे की खोज करने के लिये भयानक जंगल में चले गये। वहां बाबाजी को गुफा में एक अघोरी साधू नजर आया बालक देव जी ने अपनी दूर–दृष्टि से देख लिया कि यह साधू शेर के रूप में बच्चे को ले गया है बाबा बालक देव ने साधू से कहां जो तुमने शेर के रूप में एक माई का ईकलौता बेटा छिन लिया है उसे वापस कर दो। साधू बाबा बालक देव आपस में उस बच्चे के लिये ज्ञान रूपी बडा भारी झगडा करते रहे। अन्त में बाबाजी ने अपनी शक्ति द्वारा अघोरी साधू को हराकर उस माई का बच्चा वापस ले लिया। बाबाजी का यह चमत्कार देखकर सभी अति प्रसन्न हुये। इधर बालक देवजी को शिष्य बनाने का समागम रचा हुआ था उसके अनुसार बालक देव ने दत्तात्र्यि जी महाराज को गुरू धारण कर लिया। बालक देव ने अन्न त्याग कर दुग्ध का आहार किया था इसलिये गुरूजी ने इनका नाम पौणाहारी रख दिया जब हरिद्वार में कुम्भ का बहुत भारी मेला आया तो जूना अखाडे के महन्त दत्तात्र्यि जी महाराज के साथ सब सिद्ध मण्डली हरिद्वार पहुंची जब कुम्भ समाप्त हुआ तो गुरू जी से आज्ञा पाकर सोलह सिद्धि के साथ बाबाजी देश में धर्म प्रचार करने के लिये गये । गंगा जी से बाबाजी लक्ष्मण झूला, ऋषिकेश, वृंदावन, गोदावरी, तपोवन, गोकुल–मथुरा, काशी–प्रयाग राज, मारवाड, आसाम, बंगाल, संगला द्वीप, जम्मू द्वीप, अमर नाथ, बद्रीनाथ तथा जग्गन्नाथ स्वामी के स्थान की तरफ घूमते–घूमते देश में धर्म प्रचार करते रहे। इसी तरह सिद्ध मण्डलीयों के साथ गोष्ठी तथा सत्संग करने से बााबा जी का नाम पौणाहारी सिद्ध बाबा बालक नाथ पड गया ।

जब सूर्य ग्रहण कुरूक्षेत्र का बडा भारी मेला आया तो उस मेंले में बहुत दूर–दूर से सन्त–महात्मा एकत्रि हुये। जिनके साथ बाबाजी की सत्संग और धर्म प्रचार करने की इच्छा हुई । मेला समाप्त होने के बाद जब सिद्ध मण्डलीयां जुदा हो गयी और बालक नाथ जी द्वापर युग के समय जो पूर्व जन्म मे धरमा माई के घर बारह घडियां आरम किया था उनके बदले बारह वर्षो के लिये उस माई की गउंऐ चाराने तथा उसका हिसाब चुकाने के लिये शाहत लाई आ गये द्वापर युग में उस माई का नाम धरमो था तथा कलयुग में उनका नाम रत्नों प्रसिद्ध हुआ।

''जय बाबे दी''